राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा
मगही, भोजपुरी और **मैथिली** में सद्यःप्रकाशित पुस्तकों का
लोकार्पण समारोह, 5 सितम्बर 2016, समय–अप॰ 05:00 बजे
कर्पूरी ठाकुर सभागार, पटना संग्रहालय, पटना

एन॰बी॰टी॰ द्वारा भोजपुरी, मैथिली एवं मगही में सद्यः प्रकाशित पुस्तकों के लोकार्पण समारोह में प्रमुख रूप से उपस्थित 'नेशनल बुक ट्रस्ट' के अध्यक्ष और मेरे मित्र श्री बल्देव भाई शर्मा जी, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष एवं राज्य में कुलपति के रूप में कार्य कर चुके डॉ रिपुसूदन प्रसाद श्रीवास्तव जी, हिन्दी और मैथिली की लेखिका श्रीमती उषा किरण खान जी, मगही अकादमी के अध्यक्ष श्री उदय शंकर शर्मा जी, एन॰बी॰टी॰ के अधिकारी श्री कुमार विक्रम जी, डॉ॰ कमाल अहमद जी, उपस्थित साहित्यकारगण, साहित्य–प्रेमियों, मीडिया–प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों !

बहुभाषिकता एवं समन्वय की भावना – भारतवर्ष एवं भारतीय संस्कृति की पहचान हैं। भाषाएँ किसी भी समाज के साहित्य और संस्कृति की वाहक हुआ करती हैं। हम अपने समाज तथा राष्ट्र के विकास एवं उसकी प्रगति में प्रादेशिक एवं आंचलिक भाषाओं के महत्तम उपयोग को समझ सकें, इसी उद्देश्य के साथ आज हम सब यहां एकत्रित हुए हैं। पुस्तक प्रोन्नयन एवं लोगों में पढ़ने की आदत को बढ़ावा देने हेतु सन् 1957 में स्थापित केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय की महत्वपूर्ण संस्था राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा बिहार की तीन

प्रमुख भाषाओं मैथिली, भोजपुरी और मगही में प्रकाशन योजना के इस महत्वपूर्ण पहल का मैं स्वागत करता हूं।

अंग्रेज भाषाविद् सर जॉर्ज ग्रियर्सन ने अपने 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' में 'बिहारी' भाषा के रूप में जिन तीन भाषाओं को प्रमुखता से उद्धृत किया था उनमें मैथिली, भोजपुरी और मगही शामिल थीं। इन भाषाओं के अलावा भी अन्य कई भाषाएं जैसे अंगिका, बज्जिका आदि यहाँ प्रचलित हैं और उनका समृद्ध इतिहास रहा है।

भोजपुरी सिर्फ बिहार, झारखंड और पूर्वी उत्तरप्रदेश की ही प्रमुख भाषा नहीं है बल्कि उसका प्रसार एवं व्याप्ति अंतराष्ट्रीय स्तर पर भी है। भारत में करोड़ों लोगों द्वारा बोली समझी जानेवाली भोजपुरी भाषा का नेपाल, सूरीनाम, गुयाना, त्रिनिदाद और टोबैगो, फिजी, मॉरिशस आदि देशों में भी व्यापक प्रसार है। अगर हम बिहार के परिप्रेक्ष्य में देखें तो यह भाषा बक्सर, आरा, छपरा, सीवान, गोपालगंज, बेतिया, मोतिहारी, रोहतास, भभुआ आदि क्षेत्रों की मुख्य भाषा है। यह एक अत्यन्त मधुर और संगीतात्मकता से परिपूर्ण भाषा है। लोक साहित्य की प्रचुरता इस भाषा की अपनी विशेष पहचान रही है। कबीरदास के कुछ पदों में भोजपुरी की बानगी देखते ही बनती है। भिखारी ठाकुर को आज कौन नहीं जानता है! भोजपुरी साहित्य का एक समृद्ध इतिहास रहा है। आज इस भाषा के अंतर्गत साहित्य के सभी विधाओं में लेखनकार्य और शोध हो रहा है, पत्रिकाएं निकल रही हैं तथा प्रिंट एवं

इलेक्ट्रानिक मीडिया में हस्तक्षेप बढ़ा है। इस भाषा के संरक्षण एवं विकास के लिए राज्य सरकार की अकादमी के अलावा अन्य संस्थाएं भी कार्यरत हैं।

भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल **मैथिली** बिहार, झारखंड के अलावा नेपाल की एक प्रमुख भाषा है। बिहार के मधुबनी, दरभंगा, समस्तीपुर, खगड़िया, मुजफ्फरपुर, मुंगेर, भागलपुर, सहरसा, पूर्णिया, सीतामढ़ी, पटना आदि क्षेत्रों में बोली समझी जानेवाली मैथिली भाषा एवं साहित्य का एक समृद्ध इतिहास रहा है। प्राचीन काल से ही इस भाषा के अंतर्गत साहित्य के सभी विधाओं में साहित्य सृजन हो रहा है। महान लोक कवि विद्यापति के पद तो सभी के जुबान पर रहते हैं। करोड़ो लोगों की इस भाषा के संरक्षण एवं विकास के लिए राज्य सरकार की अकादमी के अलावा अन्य संस्थाएं भी कार्यरत हैं।

अगर हम बिहार के परिप्रेक्ष्य में देखें तो **मगही** भाषा गया, पटना, राजगीर, नालंदा, जहानाबाद, अरवल, नवादा और औरंगाबाद में मुख्य रूप से बोली जाती है। कई जैन धर्मग्रंथ इस भाषा में लिखे गए। आज सैकड़ों लेखक इस भाषा में लेखन–कार्य कर इस भाषा की महत्ता प्रतिपादित कर रहे हैं। आज इस भाषा के अंतर्गत साहित्य की सभी विधाओं में लेखनकार्य और शोध हो रहा है तथा पत्रिकाएं भी निकल रही हैं। इस भाषा के संरक्षण एवं विकास के लिए राज्य सरकार ने अकादमी की भी स्थापना कर रखी है।

हमें यह जानकर खुशी है कि एनबीटी 30 से अधिक भारतीय भाषाओं में पुस्तकों का प्रकाशन कर रहा है। इनमें वैसी भी भाषाएं शामिल हैं जो संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल नहीं हैं। एनबीटी के अध्यक्ष श्री बल्देव भाई शर्मा के विशेष प्रयत्न से बिहार की प्रमुख भाषाओं मैथिली, भोजपुरी और मगही में कुछ पुस्तकों का अनूदित संस्करण प्रकाशित हुआ है, जिसके लिए वे और उनकी पूरी टीम बधाई के पात्र हैं। हम चाहते हैं कि साहित्य से इतर ज्ञान के अन्य अनुशासनों में मूल अथवा अनुवाद के रूप में भी मैथिली, भोजपुरी और मगही में एनबीटी द्वारा अधिकाधिक पुस्तकों का प्रकाशन हो। मेरा अनुरोध है कि इन भाषाओं की विभिन्न साहित्यिक विधाओं के प्रतिनिधि–संग्रह एन॰बी॰टी॰ से प्रकाशित हों। साथ ही, इन भाषाओं के साहित्यिक इतिहास से संबंधित प्रमाणिक ग्रंथ भी एन॰बी॰टी॰ द्वारा प्रकाशित किये जाने की आवश्यकता है। इससे उच्च स्तर पर इन भाषाओं के अध्ययन–अध्यापन में बेहतरी आएगी। विभिन्न राज्यों के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और भौगोलिक परिचय के साथ किताबें एन॰बी॰टी॰ से छपी हैं। बिहार राज्य पर भी परिचयात्मक पुस्तक हिन्दी, अँग्रेजी, उर्दू और यहाँ की आंचलिक भाषाओं में प्रकाशित किया जाना श्रेयस्कर होगा। ज्ञान–विज्ञान की विभिन्न शाखाओं और समाजशास्त्र की पुस्तकों का भी क्षेत्रीय भाषाओं में प्रकाशन एक उपयोगी निर्णय होगा। बिहार की अन्य भाषाओं– अंगिका, बज्जिका

आदि के लुप्तप्राय लोकसाहित्य तथा महत्वपूर्ण रचनाओं का भी प्रकाशन हो तो यह हमारे लिए गर्व की बात होगी। विविधता में एकता की अवधारणा को पुष्ट करने हेतु प्रादेशिक भाषाओं के संरक्षण एवं उनके विकास एवं विस्तार हेतु हमें प्रयत्नशील रहने की आवश्यकता है। इससे राष्ट्र भाषा हिन्दी की ताकत और बढ़ेगी ही। हिन्दी की सहयोगी भाषायें हिन्दी के शब्द– भाण्डार को बढ़ाती हैं जिससे उसका विषय–विस्तार भी होता है और अभिव्यक्ति–क्षमता भी बढ़ती है। मैं इन्हीं अर्थों में एन॰बी॰टी॰ की इस पहल का स्वागत करता हूँ और उसके विद्वान अध्यक्ष व अधिकारियों को बधाई देता हूँ।

आज महान दार्शनिक और शिक्षाविद् भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ॰ सर्वपल्ली राधाकृणन जी का जन्म–दिवस है। इसे हम 'शिक्षक–दिवस' के रूप में मनाते हैं। ऐसे पावन दिवस के सुअवसर पर एन॰बी॰टी॰ के द्वारा आयोजित यह सारस्वत समारोह सचमुच अत्यन्त प्रासंगिक और समीचीन है। मैं आज 'शिक्षक–दिवस' के अवसर पर राज्य के सभी शिक्षकों और लेखकों को भी अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद।

जय हिन्द!

.....

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।